आत्म-सम्मान आंदोलन के 100 वर्ष

स्रोत: द हिंदू

वर्ष 2025 में आत्म-सम्मान आंदोलन **की शताब्दी** पूरी हुई, जिसने **तर्कवाद**, **सामाजिक समानता** और **जातिवाद-विरोधी विचारधारा** को बढ़ावा दिया।

आत्म-सम्मान आंदोलन

- **परिचय:** इसे वर्ष **1925** में ई. वी. रामासामी (पेरियार) द्वारा **तमिलनाडु** में आरंभ किया गया था, जिन्होंने बाद में **द्रविड़ कड़गम (Dravidar Kazhagam)** की स्थापना की और तमिल साप्ताहिक **कुडी अरसु (गणराज्य)** शुरू किया।
    - पेरियार ज्योतिराव फुले और बी.आर. अंबेडकर जैसे समाज सुधारकों से प्रभावित थे और उन्होंने वैकोम सत्याग्रह में भी भाग लिया।
- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य **जाति व्यवस्था का उन्मूलन, ब्राह्मणवादी प्रभुत्व का खंडन और तर्कसंगत सोच व व्यक्तिगत गरिमा को बढ़ावा** देना था, जैसा कि इसके पुस्तिकाओं **नामथु कुरिक्कोल** और **तिरिवितिक कालका लेतैयम** में उल्लिखित है।
- **मुख्य विशेषताएँ:**
    - **आत्म-सम्मान विवाह की पहल की –** सरल, **पुरोहित रहित समारोह** जो **कानूनी रूप से मान्य** थे।
    - **देवदासी प्रथा, जातिवाद भेदभाव और विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संघर्ष किया।**
    - **महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा दिया,** जिसमें **अन्नाई मीनाम्बल** और **वीरमल** जैसी प्रमुख हस्तियाँ शामिल थीं।
        - **मीनाम्बल** ने **ई. वी. रामासामी** को **'पेरियार'** की उपाधि प्रदान की और **बी. आर. अम्बेडकर** द्वारा उन्हें **"मेरी बहन मीना"** के रूप में संबोधित किया गया।

और पढ़ें: भारत में जातिगत आंदोलन

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/100-years-of-the-self-respect-movement